विश्व इतिहास

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Web: www.drishtiias.com
E-mail : drishtiacademy@gmail.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन और प्रबोधन
(Renaissance, Religious Reform Movements and Enlightenment)

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ होता है- "फिर से जागना"। यह वह स्थिति है जब विभिन्न यूरोपीय देशों ने एक लंबी अवधि के उपरान्त मध्यकाल के अंधकार युग को त्याग कर आधुनिक युग में दस्तक दी। पुनर्जागरण एक बौद्धिक आंदोलन था जिसकी शुरुआत 14वीं शताब्दी में इटली से हुई तथा 16वीं शताब्दी तक इसका प्रसार विभिन्न यूरोपीय देशों जैसे-जर्मनी, ब्रिटेन आदि में हुआ। पुनर्जागरण के दो आयाम थे 'दुनिया की खोज' तथा मानव की खोज। दुनिया की खोज से तात्पर्य यहाँ उन नवीन भौगोलिक खोजों से है जिनके द्वारा अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया की खोज की गई जबकि 'मानव की खोज' यहाँ पर मध्यकालीन पोपशाही व चर्च के चंगुल में जकड़ी मानव सृष्टि में स्वतंत्र चिंतन शैली के विकास को अभिव्यक्त करती है।

उपर्युक्त सभी प्रवृत्तियों के अनुसार मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि पुनर्जागरण एक ऐसा बौद्धिक एवं उदार सांस्कृतिक आंदोलन था जिसमें प्राचीन यूरोप से प्रेरणा लेकर नए यूरोप का निर्माण किया जा रहा था तथा तार्किक, आलोचनात्मक व अन्वेषणात्मक प्रवृत्तियाँ जन्म ले रही थीं। परिणामस्वरूप मनुष्य मध्यकालीन बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र चिंतन की ओर अग्रसर हुआ जिससे मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का उन्नयन हुआ जो उस युग की कला, साहित्य, दर्शन एवं विज्ञान आदि क्षेत्रों में प्रकट हुए।

पुनर्जागरण के विभिन्न पहलुओं में तार्किकता, मानवतावादी दृष्टिकोण, वैज्ञानिक प्रगति आदि का विशेष महत्त्व है। इससे समस्त यूरोप में सामंतवाद के खंडहरों पर आधुनिकता का आविर्भाव हुआ।

अंधकार युग

तीसरी शताब्दी ई. में प्रसिद्ध रोमन साम्राज्य का विभाजन पूर्वी एवं पश्चिमी रोमन साम्राज्य में हो गया, जिसमें पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया जबकि पश्चिमी रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम थी। जर्मन आक्रमणकारियों से त्रस्त पूर्वी रोमन साम्राज्य का 5वीं शताब्दी में अवसान हो गया और यही वह समय था जब यूरोप में मध्यकाल का प्रारंभ हुआ तथा सामंतवादी प्रवृत्ति विकसित हुई। मध्यकाल में मुख्य मापदंड थे- राजनीतिक सत्ता के रूप में राजतंत्र का पतन एवं सामंतवाद का उद्भव और विकास, धार्मिक सत्ता तथा सामंत में बेहतर तालमेल एवं उपभोग वर्ग के रूप में उसकी स्थिति, व्यापार-वाणिज्य का पतन तथा समस्त यूरोप में विकास के नाम पर गतिरोध उत्पन्न होना। आमतौर पर इसे अंधकार युग के नाम से जाना जाता है।

पुनर्जागरण के कारण *(Causes of Renaissance)*

आर्थिक: पुनर्जागरण की शुरुआत में व्यापार एवं वाणिज्य कारकों का विशेष महत्त्व रहा है। भूमध्यसागरीय अवस्थिति का लाभ उठाकर इटली जैसे देश में व्यापार एवं वाणिज्य का विकास हुआ। परिणामत: मुद्रा अर्थव्यवस्था, व्यापारी वर्ग एवं शहरों का उदय हुआ। इटली में वेनिस, फ्लोरेंस, मिलान, नेपल्स आदि जैसे शहर अस्तित्त्व में आए। शहरों की इस स्थिति ने सामंतवादी व्यवस्था पर चोट की, क्योंकि ये शहरी केन्द्र, सामंती एवं सामंतवादी तत्त्वों के हस्तक्षेप से वंचित होकर अपना अलग स्वतंत्र अस्तित्त्व रखते थे। अपनी मज़बूत आर्थिक स्थिति के आधार पर व्यापारी वर्ग कला एवं संस्कृति के उत्साही प्रश्रयदाता बन गए। उदाहरण के लिये इटली के फ्लोरेंस शहर के स्ट्रेजो एवं मेडिसी नामक व्यापारिक परिवार यूरोप में कलाकारों एवं विद्वानों के सबसे प्रसिद्ध आश्रयदाता थे। फलत: ज्ञान को प्रोत्साहन देकर इन व्यापारिक वर्गों ने रूढ़िवादिता, कूपमंडूकता एवं संकीर्ण मानसिकता वाले अंधे समाज को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने में यथेष्ट योगदान दिया।

धर्मयुद्ध की भूमिका: पुनर्जागरण को बढ़ावा देने में धर्मयुद्ध (क्रुसेड) की भूमिका सराहनीय रही। येरूशलम को लेकर ईसाइयों एवं सल्जुक तुर्कों (मुसलमानों) के मध्य होने वाले इस युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोपवासियों का पूर्वी देशों से संपर्क

स्थापित हुआ तथा वैचारिक समन्वय स्थापित हुए। फलतः अरबी अंक, कागज, बीजगणित आदि का ज्ञान यूरोप के लोगों को हुआ तथा तर्कशक्ति एवं वैज्ञानिक खोजों को बढ़ावा मिला। इतना ही नहीं, धर्मयुद्ध में असफलता से चर्च एवं पोप की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा। फलतः सामंतवादी व्यवस्था की इस मज़बूत स्तंभ को जबर्दस्त आघात पहुँचा।

कुस्तुनतुनिया का पतनः पुनर्जागरण को गति देने में कुस्तुनतुनिया के पतन का भी योगदान है। कुस्तुनतुनिया पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी थी जो ज्ञान-विज्ञान का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। 1453 ई. में तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया पर आधिपत्य स्थापित कर लिये जाने के क्रम में ज्ञान-विज्ञान का यह केन्द्र इटली के विभिन्न शहरों में स्थानांतरित हो गए तथा वहाँ बौद्धिक चेतना के नए प्रतिमान स्थापित हुए। दूसरी बात यह कि पूर्व के साथ होने वाले व्यापारिक मार्ग अवरुद्ध हो गए, फलतः पूर्व के देशों से व्यापारिक संबंध बनाने की दिशा में भौगोलिक खोजों की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया की शुरुआत हो गई। इसी क्रम में अमेरिका, भारत सहित विभिन्न एशियाई तथा अमेरिकी देशों की खोज हुई एवं नवीन व्यापारिक मार्ग अस्तित्त्व में आए। फलतः इन देशों की आर्थिक संवृद्धि में तीव्र वृद्धि हुई।

प्रेस का आविष्कारः यद्यपि यूरोपवासियों को कागज की जानकारी तो मध्यकाल में ही अरबों से हो गई थी परन्तु इसका व्यापक प्रसार तब हुआ जब 15वीं शताब्दी में जर्मनी के गुटेनबर्ग ने प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया। इससे ज्ञान-विज्ञान की सामग्री पुस्तकाकार रूप में सर्वसुलभ हो पाई। वस्तुतः अभी तक ज्ञान का संकेंद्रण सीमित संस्थाओं (चर्च) एवं व्यक्तियों (पादरियों) तक ही था, परन्तु अब इसका वृहत् क्षेत्र में प्रसार हुआ तथा लोग रूढ़िवादिता एवं कूपमंडूकता के साए से उबरकर प्रगति की वादियों में पल्लवित एवं पुष्पित होने लगे। इतना ही नहीं, विभिन्न स्थानीय भाषाओं में विभिन्न धार्मिक एवं धर्मेतर पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। फलतः लोगों का वास्तविक एवं सत्य ज्ञान से साक्षात्कार हुआ। उनमें जिज्ञासा, वैज्ञानिकता, तार्किकता जैसी चेतन शक्ति का विकास हुआ जिससे एक आदर्श बौद्धिक वातावरण के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की जा सकी।

मंगोल साम्राज्य का उत्कर्षः 13वीं शताब्दी में कुबलई खाँ के नेतृत्व में विशाल मंगोल साम्राज्य अस्तित्त्व में आया। उसका दरबार पूर्व एवं पश्चिम के विद्वानों का प्रसिद्ध मिलन केन्द्र था। फलतः यहाँ पूर्व-पश्चिम ज्ञान का एक आदर्श समन्वय वाली परिस्थिति उत्पन्न हो गई। प्रसिद्ध वेनिस यात्री मार्कोपोलो 1272 ई. में कुबलई खाँ के दरबार में आया था, जिसके यात्रा विवरण को जानकर पूर्व के देशों के ज्ञान-विज्ञान के बारे में यूरोपीय लोगों में जिज्ञासा बलवती होने लगी और इस प्रकार मौलिक चिन्तन का युग शुरू हुआ।

पुनर्जागरण के प्रभाव *(Effects of the Renaissance)*

पुनर्जागरण महज प्राचीन रोम एवं यूनान की गौरवपूर्ण अतीत की खोज एवं विश्लेषण तक ही सीमित नहीं था वरन् इसका दायरा नवीन परिप्रेक्ष्य में अत्यंत ही विस्तृत था जिसने तत्कालीन धर्म, राजनीति, समाज, साहित्य, विज्ञान एवं कला आदि सांस्कृतिक क्षेत्रों में वास्तविक चिन्तन जैसे तत्त्वों को तीव्रतर किया।

धर्म सुधारः पुनर्जागरण काल में अंधविश्वास तथा तत्कालीन मध्ययुगीन रूढ़िवादी धर्म केन्द्रित व्यवस्था के घिनौने पक्ष पर तीखी टिप्पणी की गई। धर्म के हरेक पहलुओं को तर्क की कसौटी पर खरा उतरने के पश्चात् ही स्वीकार किया जाता था। फलतः चर्च एवं पोप-पादरी के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों/नियमों को शक की नज़र से देखा जाने लगा। अंततः धर्म सुधार आंदोलन के रूप में यह परिकल्पना अपने स्पष्ट रूप में सामने आई जिसके परिणामस्वरूप ईसाई धर्म में खोखलेपन के विरुद्ध आंदोलन हुए।

राजतंत्र का सशक्तीकरणः वास्तव में यूरोप में मध्ययुग में सामंती व्यवस्था के अन्तर्गत सामंत एवं पादरी वर्ग की विशिष्ट स्थिति थी। परन्तु पुनर्जागरण काल में नवीन परिस्थितियों में एक निरंकुश राजतंत्र की आवश्यकता महसूस की गई ताकि सामंती व्यवस्था की शोषणकारी एवं अराजकतावादी स्थिति पर काबू पाया जा सके। इस समय लोगों में राष्ट्रीय चेतना का व्यापक विकास हुआ। अंततः शक्तिशाली राष्ट्र राज्यों का उदय हुआ, जिन्होंने निरंकुश राजतंत्र की अगुवाई में स्पष्ट रूप धारण किये। मैकियावेली ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रिंस' में शक्तिशाली निरंकुश राजतंत्र की आवश्यकता एवं उसके औचित्य का सक्रिय समर्थन किया। इस समय लोगों में अद्‌भुत राष्ट्र प्रेम का विकास हुआ तथा स्थानीय भाषाओं के प्रसार से यह और मज़बूत हुआ।

मानवतावाद: पुनर्जागरण काल में मानवतावादी दृष्टिकोण प्रबल रूप में सामने आया। इसके अंतर्गत मानव को ईश्वर की अनुपम कृति माना गया तथा संपूर्ण गतिविधियाँ मानवीय जीवन को बेहतर बनाने की ओर केन्द्रित की गईं। मनुष्य के इहलौकिक जीवन पर ही ज़ोर दिया गया तथा साहित्य की विषय-वस्तु में मनुष्य के लौकिक जगत को प्राथमिकता दी गई। पेट्रार्क को पुनर्जागरण काल का सबसे पहला मानवतावादी माना जाता है। पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति के विभिन्न क्षेत्रों में मानवतावाद के लक्षण स्पष्ट हैं, जैसे- साहित्य में मानव की समस्याओं एवं उसके सुखमय जीवन को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया। इतना ही नहीं, मनुष्य को अपनी चिंतन शक्ति तथा बुद्धि के कारण समस्त प्राणियों में प्रमुख के रूप में स्वीकार किया गया तथा यह माना गया कि ईश्वर द्वारा इनकी क्षमताओं को किसी सीमा में नहीं बांधा गया है। चित्रकला के क्षेत्र में भी मानवीय पहलुओं की अभिव्यक्ति को अप्रतिम रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसका उदाहरण लियोनार्दो-द-विंची कृत 'मोनालिसा' का प्रसिद्ध चित्र है, जिसमें मानवीय संवेदनाओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। अंततोगत्वा मानव के नागरिक जीवन का महत्त्व बढ़ने लगा।

कला और संस्कृति

(i) **साहित्य पर:** पुनर्जागरण काल में देशी भाषाओं का साहित्य लेखन में व्यापक उपयोग होने लगा। यद्यपि अभी तक लैटिन भाषा ही वह भाषा थी जिसमें साहित्य की रचना होती थी जो जन-सामान्य की भाषा नहीं थी परन्तु पुनर्जागरण काल में इटालवी, स्पेनी, फ्राँसीसी, अंग्रेज़ी, जर्मन आदि क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ तथा साहित्यिक भाषा के रूप में इन्हें सम्मानित स्थान मिला। फलत: अधिकतम लोग ज्ञान के वास्तविक रूप से अवगत हुए एवं स्वतंत्र तर्कबुद्धि का विकास हुआ। दाँते ने इटालवी भाषा में 'डिवाइन कॉमेडी' नामक महाकाव्य लिखा, जिसमें मुख्य रूप से मानव प्रेम, देश प्रेम एवं प्रकृति प्रेम का वर्णन किया गया। इसी आधार पर पेट्रार्क, जिसे मानवतावाद का जनक माना जाता है, ने इटालवी भाषा में लौकिक विषयों पर केन्द्रित काव्य की रचना की। हॉलैंड निवासी इरास्मस ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रेज ऑफ फॉली' (मूर्खता की प्रशंसा) में चर्च की बुराइयों का खूब मजाक उड़ाया। 'यूटोपिया' नामक अपनी प्रसिद्ध कृति में थॉमस मूर (इंग्लैंड निवासी) द्वारा एक आदर्श समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया। राजनीति से संबंधित प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रिंस' में मैकियावेली द्वारा 'राज्य' की एक नवीन अवधारणा प्रस्तुत की गई जो स्वतंत्र एवं संप्रभुत्व संपन्न हो तथा राज्य एवं धर्म दोनों अलग-अलग क्षेत्र होने चाहिये। इसी तरह प्रसिद्ध स्पेनिश सर्वांतेस ने अपनी पुस्तक 'डॉन क्विजोट' में मध्यकालीन सामंती शूरवीरता की खिल्ली उड़ाई। अंग्रेज़ी भाषा के संबंध में फ्राँसिस बेकन एवं विलियम शेक्सपीयर का नाम अग्रगण्य हैं। शेक्सपीयर द्वारा सभी संभव मानवीय भावों, उसकी क्षमताओं एवं दुर्बलताओं को सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन समग्र प्रयासों से पुनर्जागरण काल में लगभग सभी यूरोपीय देशों में विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में मानवतावादी केन्द्रित साहित्यों की रचना की गई। फलत: यूरोप के विभिन्न भागों में विभिन्न भाषाओं द्वारा भाषाई एकता और अंतत: राष्ट्रीय भावनाओं का विकास संभव हो पाया।

(ii) **चित्रकला और वास्तुकला:** पुनर्जागरण काल में कला के रूप में चित्रकला एवं वास्तुकला का यथेष्ट विकास हुआ जो मूलत: मानवीय पहलू पर केन्द्रित था। चित्रकला में मानव शरीर के विभिन्न अंगों को अत्यंत ही बारीक ढंग से प्रस्तुत किया गया। लियोनार्दो-द-विंची की अनुपम कृति 'द लास्ट सपर' एवं 'मोनालिसा' विश्व प्रसिद्ध चित्र है। चित्र निर्माण हेतु तेल पेंटिंग (Oil Painting) का प्रयोग किया गया। इस समय माइकेल एंजेलो द्वारा निर्मित 'डेविड' एवं 'पियथा' मूर्तिकला के मशहूर नमूने हैं। इटली में प्रसिद्ध चित्रकार राफेल था जिसने यीशू मसीह की माँ मेडोना के प्रसिद्ध चित्र बनाए। ये सभी कृतियाँ मानवता से ओत-प्रोत थीं। इस समय स्थापत्य के क्षेत्र में गोथिक स्थापत्य कला का अवसान हुआ। कमानी छतें, नुकीले मेहराब एवं टेके पुनर्जागरणकालीन स्थापत्य की प्रधान विशेषताएँ थीं। इस संबंध में रोम के सेंट पीटर का प्रसिद्ध गिरजाघर नई शैली का प्रसिद्ध स्थापत्य है।

अंतत: हम कह सकते हैं कि यूरोप में पुनर्जागरण के प्रसार के फलस्वरूप प्रगतिशील विचारों को सम्मान मिला और मानवतावादी दृष्टिकोण विकसित हुआ। सामंतवाद का पतन, राष्ट्र राज्यों का उदय, राष्ट्र प्रेम, व्यापारिक एवं वाणिज्यिक उन्नति तथा भौगोलिक खोजों के परिणामस्वरूप उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विकास हुआ, धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध धर्म

सुधार आंदोलन हुए, तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास हुए जिसके परिणामस्वरूप कालांतर में औद्योगिक क्रांति संभव हो पाई। इन सारे प्रगतिशील तत्त्वों का बीजारोपण मूलतः पुनर्जागरण काल में ही संभव हो पाया तथा विभिन्न यूरोपीय देशों ने मुख्य रूप से प्रगतिशील विचारों की विश्वस्तर पर अगुवाई की।

वैज्ञानिक विकासः पुनर्जागरण काल में विज्ञान के नए प्रतिमान स्थापित हुए। इससे पूर्व ज्ञान-विज्ञान पर चर्च एवं पोप का कड़ा नियंत्रण था। इस रूढ़िवादी व्यवस्था में प्रगतिशील विचारों का दमन किया जाता था तथा चर्च एवं पोप द्वारा प्रतिपादित प्राचीन विचारों एवं मान्यता के विरुद्ध नवीन विचार प्रस्तुत करना एक तरह से चर्च की सत्ता को चुनौती देने के समान थी। परन्तु पुनर्जागरण काल में वैज्ञानिक एवं तार्किक बुद्धि का विकास संभव हो पाया। पोलैण्ड के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री कॉपरनिकस द्वारा दिया गया यह विचार कि 'पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है', कालान्तर में गैलिलियो द्वारा आविष्कृत दूरबीन से इस सिद्धान्त की पुष्टि हुई। जर्मनी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक केपलर द्वारा विभिन्न ग्रहों की गतियाँ एवं उनके कक्षाओं के बारे में नियम प्रस्तुत किया गया। आगे चलकर इंग्लैंड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइजक न्यूटन ने खगोलीय पिंडों के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। चिकित्सा के क्षेत्र में बेल्जियम के प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक वेसेलियस द्वारा शल्य चिकित्सा की विशेष जानकारी प्रस्तुत की गई तथा साथ ही प्रथम बार मानव शरीर की रचना क्रिया के बारे में पूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई। रक्त परिसंचरण के बारे में इंग्लैंड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक विलियम हार्वे द्वारा विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई। इतना ही नहीं 13वें पोप ग्रेगरी द्वारा लीप वर्ष के आधार पर सौर वर्ष को प्रस्तुत किया गया जो ग्रेगरी कैलेण्डर के रूप में अभी मान्यता प्राप्त है।

अर्थजगत पर प्रभावः अर्थव्यवस्था का समाज की धुरी बन जाना पुनर्जागरण की एक अन्यतम उपलब्धि रही है। पुनर्जागरण से पूर्व तक उत्पादन प्रक्रिया की दृष्टि से 'कृषि' तथा सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से धार्मिक संस्थाओं को सर्वोच्चता प्राप्त थी। कृषि से इतर गतिविधियाँ गौण महत्त्व रखती थी। मध्यकाल में कामगारों के लिये गिल्ड व्यवस्था प्रचलित थी जिसमें लम्बी समयावधि के दौरान अनेक दोष समाहित हो गए थे पुनर्जागरण के पश्चात् इन 'गिल्ड' संस्थाओं का स्थान कारखाना पद्धति लेने लगी जिसकी चरम अभिव्यक्ति औद्योगिक क्रांति के रूप में हुई। नवीन भौगोलिक खोजों, आविष्कारों और यात्राओं से उत्पादन व वितरण के ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन आए। इन परिवर्तनों के प्रति राजव्यवस्था का समर्थनकारी रुख और धार्मिक जंजीरों के ढीले पड़ने से पूंजीवादी व्यवस्था के विकास को गति प्राप्त हुई। नगरीय जीवन, बैंकिंग व्यवस्था, स्टॉक कम्पनियों और मध्यवर्गीय जीवन शैली के विकास और "श्रम के बिकाऊ" बन जाने से सामाजिक जीवन में अर्थजगत की प्रतिष्ठा स्थापित हुई और यहीं से अर्थव्यवस्था समाज और राजनीति की अनुवर्ती होने के स्थान पर समाज और राजनीति के निर्धारक की भूमिका का निर्वहन करने लगी।

सामाजिक जीवन परः पुनर्जागरण से 'विशिष्ट जन केन्द्रित' समाज व्यवस्था 'सामान्य जन केन्द्रित' व्यवस्था की ओर उन्मुख हुई। समाज संरचना के अनुक्रम में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह रहा कि पादरी व सामंती वर्ग जो कि अनुत्पादक तथा विलासी हो गया था उसके स्थान पर मध्यवर्ग वरीय स्थान पर आ गया। इस दौरान शक्ति समीकरण यह रहा कि मध्यवर्ग तथा केन्द्रीय सत्ता (निरकुंश राजतंत्र) एक पक्ष; वहीं सामंत व पादरी वर्ग दूसरे पक्ष के रूप में प्रतिस्पर्द्धी बनकर उभरे। धर्म केन्द्रित तथा समाज केन्द्रित चिंतन शैली के स्थान पर व्यक्तिवादी चिंतन को अपेक्षित महत्त्व मिला। समाज में विभिन्न वर्गों के हित परस्पर विरोधाभाषी रूप में उभरे जिससे टकराहट, कलह व असंतोष और तनाव में वृद्धि हुई। धर्म के प्रभाव में कमी आने से अंधविश्वास, भाग्यवादी और पारलौकिक चिंतन में समाज का विश्वास कम होता गया। इन सभी घटनाओं व प्रवृत्तियों से मध्यकालीन समाज का ढाँचा चरमराने लगा और आधुनिक समाज की नींव तैयार हुई।

पुनर्जागरण इटली में ही क्यों आरंभ हुआ? *(Why the Renaissance began in Italy)*

इटली में पुनर्जागरण की शुरुआत होना स्वाभाविक घटना थी क्योंकि इटली में प्राचीन उपलब्धियाँ महीन- धुंधले रूप में ही सही किंतु अस्तित्त्व में थी। नगरों के उदय तथा धनाढ्य वर्ग द्वारा कला व साहित्य का आश्रय देने की प्रवृत्ति इटली में बनी रही थी। इटली के नगरों का सामाजिक जीवन अपेक्षाकृत अन्य राष्ट्रों के समरसतापूर्ण व उदार विचारों से संपन्न था जहाँ पर नवीन धनाढ्य वर्ग तथा पुराने ढहते कुलीन परिवार एक ही स्थान पर मौजूद थे।

इटली के नगरों के व्यापारिक मार्ग पर स्थिति होने व जल मार्ग उपलब्ध होने से इटलीवासियों को दोहरा फायदा था। इससे समृद्धि के उत्तरोत्तर बढ़ने एवं आपसी मेलजोल के स्थल के रूप में उभरने में नगरों को सहायता मिली। इन नगरों में व्यापारी तथा सैनिक आवाजाही से परस्पर विचार विनिमय तथा यूरोप के बाहर की गतिविधियों के सन्दर्भ में इटलीवासी परिचित रहे। यहाँ की नगरीय संपन्नता ने बड़े व्यावसायिक घरानों के बनने में सहयोगी भूमिका निभाई। अब यही घराने संपन्नता की पराकाष्ठा पर पहुँचकर अपने धन का निवेश कला, साहित्य और स्थापत्य में करने को प्रवृत्त हुए। नगरीय समाज में उभरे मध्यवर्ग को चर्च की जकड़न कभी स्वीकार नहीं रही और उसने चर्च व पोप की अवहेलना आरंभ कर दी।

भौगोलिक तथा आर्थिक कारणों के अतिरिक्त प्राचीन रोमन सभ्यता के स्मारकों का इटली में मौजूद होना भी इतालवी लोगों की 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' को प्रेरित कर रहा था। पुनर्जागरण के सन्दर्भ में रोचक तथ्य यह रहा कि जिस धर्म की जकड़न के विरोध में यह आंदोलन प्रकट हुआ वह 'धर्म' भी इसके लिये समर्थक बना, क्योंकि रोम में 'पोप का निवास' था जहाँ समस्त ईसाई जगत से धन का प्रवाह बना हुआ था। इसके अतिरिक्त कुछेक पोप पुनर्जागरण की भावना से प्रेरित थे जिनके द्वारा लैटिन भाषा में यूनानी साहित्य का अनुवाद तथा पुस्तकालय की स्थापना की गई।

इन कारणों के अतिरिक्त इटली की शिक्षा व्यवस्था काफी हद तक लौकिक व धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्ति से युक्त थी जिसमें व्यावसायिक व भौगोलिक ज्ञान को पर्याप्त महत्त्व मिला हुआ था। 1453 की घटना भी इटली के लिये वरदान सिद्ध हुई जब कुस्तुनतुनिया का पतन होने पर वहाँ के विद्वानों, कलाकारों और व्यापारियों ने इटली में सर्वप्रथम शरण प्राप्त की। अतः कहा गया कि "यूनान का पतन नहीं हुआ था अपितु उसका इटली में प्रवजन हो गया था।"

पुनर्जागरण: स्वरूप/प्रकृति *(Renaissance: Nature)*

पुनर्जागरण की प्रकृति से तात्पर्य उन मूल विशेषताओं से है जिसके द्वारा इस आंदोलन का स्वरूप निर्धारित किया जा सके। यह आंदोलन अपनी मूल प्रकृति में ही तार्किक, बौद्धिक व मध्यवर्गीय चेतना से युक्त था जिसने धर्मनिरपेक्षता, मानववादी मूल्यों, साहस व सौन्दर्य के मूल्यों की स्थापना में अप्रतिम योगदान दिया।

मानववाद की स्थापना इस आंदोलन की प्रमुख उपलब्धि रही जिसमें निहित था- मानव के जीवन में रुचि लेना, उसकी समस्या पर चिंतन, मानव जीवन का महत्त्व स्वीकार करना तथा उसे उन्नत बनाने का प्रयास करना व पारलौकिक चिंतन की अपेक्षा इहलौकिक चिंतन को महत्त्व देना। पेट्राक तथा इरास्मस प्रमुख मानवतावादी थे। इस समय ईसा का चित्रण ईश्वर नहीं बल्कि मानव के रूप में किया गया। अध्ययन के क्षेत्र में धर्मशास्त्रों की अपेक्षा साहित्य व इतिहास अध्ययन के क्षेत्र बन गए जिन्हें 'मानविकी' कहा गया। समग्रतः मानव महत्त्व की प्रतिष्ठा की गई और सार यही रहा कि धर्म, प्रकृति, कला साहित्य मानव जनित तथा मानव के लिये हैं ना कि मानव इनके लिये। यहीं से दूसरी महत्त्वपूर्ण अवधारणा **व्यक्तिवाद** का आरंभ होता है।

आंदोलन की अन्य महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति थी **धर्मनिरपेक्षता** के मूल्य की स्थापना जिससे मानव जीवन के समस्त क्रियाकलाप जो चर्च की जकड़न में थे उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त हुई। मानववाद तथा व्यक्तिवाद की परिणति व्यक्ति के आत्मविश्वास की वृद्धि के रूप में प्रकट हुई। कर्मफल के लिये ईश्वर को ज़िम्मेदार न मानकर मानव ने उपलब्धियों का श्रेय लेना प्रारंभ किया तथा भौगोलिक खोजों को अंजाम दिया।

सम्पूर्ण पुनर्जागरण के दौरान जिस वर्ग ने प्रेरणा व सक्रिय भूमिका द्वारा योगदान किया उसमें **मध्यवर्ग** अतुलनीय रहा। व्यापारियों व बैंकरों ने विद्वान कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया। इस संपन्न वर्ग ने पोप व सामंती जकड़नों का खुलकर विरोध करने का साहस किया। किंतु पुनर्जागरण का मध्यवर्गीय स्वरूप सिर्फ चेतना एवं नेतृत्व के सन्दर्भ में ही था प्रभाव की दृष्टि से यह सिर्फ मध्यवर्ग का आंदोलन न होकर समस्त यूरोप का प्रतिनिधित्व करता था।

पुनर्जागरण ने सहज सौन्दर्य (मोनालिसा) के महत्त्व को स्थापित किया। इस दौरान **बहुमुखी प्रतिभा** संपन्न व्यक्तियों का विशेष महत्त्व रहा जिससे विचारों की स्वतंत्रता तथा उनकी स्वतंत्र अनुपालना झलकती है (लियानार्डो तथा माइकल एंजलो)।

धर्म सुधार आंदोलन *(Religious Reform Movements)*

धर्म सुधार आंदोलन से अभिप्राय कैथोलिक ईसाई धर्म में व्याप्त अंधविश्वासों एवं रूढ़िवादिता के विरुद्ध उस आंदोलन से है जो पुनर्जागरण के उत्तरवर्ती काल में ईसाई जगत में हुआ था। यह आंदोलन धर्म के साथ-साथ तत्कालीन राजनीति एवं सामाजिक व्यवस्था से भी अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था। इस आंदोलन के फलस्वरूप ईसाई धर्म में विभाजन हो गया-प्रोटेस्टेंट धर्म एवं कैथोलिक धर्म। विभिन्न यूरोपीय देशों ने रोमन कैथोलिक चर्च से संबंध तोड़ लिये एवं वहाँ पृथक् चर्च की स्थापना हुई, जिसे आमतौर पर प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इतना ही नहीं, कैथोलिक धर्म में सुधार की आवश्यकता को महसूस कर विभिन्न कारगर कदम भी उठाए गए और इस रूप में यह आंदोलन कैथोलिक धर्म सुधार आंदोलन या प्रति धर्म सुधार आंदोलन के नाम से भी लोकप्रिय हुआ।

आंदोलन की पृष्ठभूमि *(Background of Movement)*

मध्य काल में सामंतवाद एवं चर्च नामक दो समानांतर एवं संबद्ध सत्ता का प्राधान्य था। ईसाई कैथोलिक चर्च रोम के पोप की अगुवाई में एक व्यवस्थित श्रेणीबद्ध संगठन के रूप में परिवर्तित हो गई थी, जिसे आमतौर पर 'पोप के राजतंत्र' के नाम से जाना जाता था। यह एक ऐसी प्रभुसत्ता संपन्न स्थिति का द्योतक था, जो संपूर्ण ईसाई जगत में सामाजिक एवं धार्मिक सर्वेसर्वा का दावा करता था। चर्च में पोप का स्थान सबसे ऊँचा था जिसे पृथ्वी पर ईसा मसीह का प्रतिनिधि माना जाता था। रोम स्थित पोप संपूर्ण ईसाई जगत का प्रमुख होता था। पोप के अधीन ईसाई जगत के चर्च एवं धार्मिक सत्ता से जुड़े सभी पक्ष एक ऐसी बोझिल एवं उबाऊ परिस्थिति को बढ़ावा दे रहे थे, जिससे जनमानस में विद्रोह की अग्नि प्रज्जवलित होने लगी थी। व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक की अवधि को विभिन्न धार्मिक रीति-रिवाजों से आबद्ध कर दिया गया था। ऐसी व्यवस्था जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष में कम से कम एक बार मौखिक रूप से अपने पाप को स्वीकार करना पड़ता था तथा तद्नुसार दंड का भागी बनना बाध्यकारी था। इस व्यवस्था की अवहेलना करना धर्म एवं समाज से बहिष्कृत होना था। यह एक ऐसी युक्ति थी जिससे जनमानस धार्मिक आडंबर की आड़ में दबे जा रहे थे। इस संदर्भ में एक घृणित बात और भी थी जो आमतौर पर 'संस्कार' के नाम से जानी जाती थी, जिसके अंतर्गत मुख्यतः तीन संस्कार की व्यवस्था थी-नाम-संस्कार, पाप स्वीकार-संस्कार एवं परम प्रसाद-संस्कार। धार्मिक आडंबर का एक और भी महत्त्वपूर्ण पहलू था-जादू-टोने और अलौकिक सत्ता में आस्था वाली सड़न व्यवस्था का प्रचलन।

चर्च जैसी धार्मिक संस्था में विभिन्न पदों पर आसीन पादरियों अथवा धर्माधिकारियों में अनैतिकता का बोलबाला था। विभिन्न धार्मिक पदों की बिक्री होती थी तथा नव पदासीन व्यक्ति अच्छी आमदनी के विभिन्न तरीके अपनाते थे। विभिन्न संस्कारों जैसे पाप स्वीकार संस्कार एवं मृत्यु प्रमाणपत्र बेचे जाने के एवज में अच्छी कमाई होती थी। इसके अतिरिक्त चर्च द्वारा नियत धर्मानुसार आचरण न करने पर व्यक्ति की संपत्ति जब्त कर ली जाती थी तथा धार्मिक मान्यताओं का विरोध किये जाने पर धर्म विरोधियों को खूँटों से बांधकर जिंदा जला दिया जाता था।

धर्म सुधार *(Religious Reform)*

धार्मिक दोषों से इतर अन्य कारणः धर्म व्यवस्था में व्याप्त इस **सड़ांध** को धर्म सुधार आंदोलन हेतु प्रेरित करने में पुनर्जागरण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पुनर्जागरण से उभरी राष्ट्रवादी चेतना के लिये पोप का साम्राज्य सबसे बड़ा अवरोधक था। पोप किसी भी राज्य में हस्तक्षेप कर वहाँ के शासक को बदलने तक का साहस रखता था जिससे इन राज्यों की राष्ट्रीय अस्मिता खण्डित हो रही थी। अतः वह पोप को 'विदेशी पोप' की निगाह से देखने लगे। पुनर्जागरण के दौरान स्वतंत्र, तार्किक चिंतन शैली का विकास हुआ जिससे अविवेकी धार्मिक रूढ़ियों पर प्रश्नचिह्न लगना प्रारंभ हुए। परम्पराओं, आडम्बर तथा अंधविश्वास और पारलौकिक चिंतन में विश्वास घटने से धर्म और पोप की सत्ता में कमी हुई। जबकि मानववादी चिंतन ने धर्मकेन्द्रित समाज से मानव केन्द्रित समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया और इस राह में रोड़ा थे चर्च और पादरी वर्ग। भौगोलिक खोजों और व्यापार के बढ़ने से ईसाई जगत या यूरोप अन्य देशों के सम्पर्क में आया जिससे मानसिक संकीर्णता की चारदीवारियाँ टूटने लगी और उन्हें अपने धार्मिक शोषण के स्वरूप से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। कागज तथा

छापेखाने के आविष्कार ने साहित्य और धर्मशास्त्रों को सामान्य व्यक्तियों तक पहुँचा दिया जिससे उन्हें अब पादरियों द्वारा यह कहकर नहीं बरगलाया जा सकता था कि 'बाइबिल में यह लिखा है'- वह व्यक्ति स्वयं पढ़ कर देख सकते थे। धर्म सुधार आंदोलन को राजतंत्र का सक्रिय समर्थन प्राप्त हुआ क्योंकि वह पोप द्वारा अपनी शक्तियों पर अंकुश लगा हुआ महसूस करते थे। इनके अलावा एक वर्ग और जो धर्म से पीड़ित था वह था व्यावसायिक वर्ग क्योंकि ईसाई धर्म परंपरागत रूप से ब्याज पर धन के लेन-देन को बुरा मानता था और पोप के द्वारा धन को विलासी व अनुत्पादक कार्यों में लगाना भी उन्हें अखरता था।

अंत में सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह रहा कि विभिन्न आंरभिक धर्म सुधारकों (आलव्हीग, वाइक्लिफ, जॉन हस, इरास्मस) ने धर्म में व्याप्त बुराइयों को समय-समय पर उकेरा जिससे समग्र रूप से धर्म सुधार की आवश्यकता प्रकट हुई। 'क्षमापत्रों की बिक्री' वह तात्कालिक कारण बनी जिसने मार्टिन लूथर को विद्रोह की शुरुआत करने हेतु प्रेरित किया।

प्रोटेस्टेंट आंदोलन *(Protestant Movement)*

1517 ई. में मार्टिन लूथर जो जर्मनी के विटेनबर्ग स्थित सेंट अगस्तीन के साधु थे, ने प्रचलित दंडमोचन पत्रों के विरुद्ध खुले आम विद्रोह कर दिया और विटेनबर्ग के चर्च के गेट पर 95 कथनों से युक्त लेख को टांग दिया। यह एक ऐसा संवेदनशील धार्मिक मामला था जिसने संपूर्ण ईसाई जगत में तहलका मचा दिया।

लूथर को धर्म से बहिष्कृत कर दिया गया परन्तु जर्मनी के कई शासकों द्वारा लूथर के इस कदम का समर्थन किया गया। लूथर द्वारा कैथोलिक चर्च के तत्कालीन सभी मापदंड को अस्वीकार कर जर्मनी में एक स्वतंत्र जर्मन चर्च की स्थापना की गई। इस नवीन चर्च में जर्मन भाषा का प्रयोग किया गया, मठों की व्यवस्था समाप्त हुई एवं पादरियों को दैवी अधिकारों से वंचित होना पड़ा।

वस्तुत: धर्म को लेकर धर्म सुधार आंदोलन का सूत्रपात तो हुआ परन्तु इसके पीछे राजनीतिक एवं आर्थिक तत्त्वों की भी महती भूमिका रही। पुनर्जागरण के क्रम में यूरोप में राष्ट्रीय चेतना पर आधारित राष्ट्रीय राज्यों के उदय की पृष्ठभूमि तैयार हुई। फलत: मध्यकालीन सामंती व्यवस्था एवं चर्च के विरुद्ध तत्कालीन राष्ट्रीय राज्यों एवं व्यापारिक वर्गों का संघर्ष हुआ। शासकों द्वारा अपनी राज्य सीमाओं के अंतर्गत पूर्ण शक्ति संपन्न प्रभुसत्ता का दावा किया गया तथा इस राजनीतिक सीमाओं के अंतर्गत राज्यों के चर्च तथा पुरोहित वर्गों पर मज़बूत नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया गया। चर्च तथा उससे जुड़े व्यक्तियों के पास अकूत संपत्ति का संचय था, जिसे हड़पकर राजाओं द्वारा राजनीतिक शक्ति को और बेहतर तरीके से संचालित किया जा सकता था और इसमें सबसे बड़ी बात थी कि इसकी आवश्यकता अनिवार्य रूप से महसूस की जा रही थी। इतना ही नहीं, चर्च की यह असीमित संपत्ति कर मुक्त थी तथा कर का मुख्य भार व्यापारिक वर्ग एवं नवपूंजीपति वर्ग पर ही था। अत: स्वाभाविक रूप से राजा, व्यापारी वर्ग एवं सामंत चर्च के प्रबल विरोधी के रूप में उभरे। अत: धर्म सुधार आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू उसका तत्कालीन राजनीतिक एवं आर्थिक पक्ष भी था, जिसने इस आंदोलन में उत्प्रेरक का काम किया।

जर्मनी में लूथर के नेतृत्व में सफल प्रोटेस्टेंट आंदोलन से प्रेरित होकर विभिन्न देशों में चर्च की तत्कालीन सत्ता के विरुद्ध तीव्र विद्रोह प्रारंभ हो गए, जिसकी समय एवं स्थान के अनुरूप अपनी खास विशिष्टताएँ भी थी। इस दृष्टि से स्विट्जरलैंड में ज्विंगली एवं काल्विन के नेतृत्व में प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार आंदोलन हुआ जिसे वहाँ व्यापक समर्थन मिला। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड एवं अमेरिका में प्यूरिटन, फ्राँस में ह्यूगेनॉट प्रोटेस्टेंट आंदोलन संपन्न हुए। इस समय डेनमार्क, स्वीडन एवं नार्वे जैसे स्कैंडेनेवियन देशों में लूथर के विचारों को जबर्दस्त समर्थन मिला तथा राजकीय चर्च के रूप में प्रोटेस्टेंट लूथरीय चर्च की स्थापना हुई। वस्तुत: विभिन्न देशों ने कुछ विशिष्ट कारणों से तत्कालीन प्रोटेस्टेंट आंदोलन को तीव्र किया। उदाहरण के रूप में इंग्लैंड में 'तलाक' विषयों पर तत्कालीन राजा हेनरी अष्टम एवं पोप में विवाद हो गया और हेनरी द्वारा खुद को चर्च का प्रमुख घोषित किया गया। अंतत: कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेंट के मध्य यह विवाद इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम के प्रयासों से समाप्त हुआ जब वहाँ राजकीय चर्च के रूप में इंग्लैंड के चर्च की स्थापना की गई।

कैथोलिक धर्म सुधार/प्रतिधर्म सुधार *(Catholic Religious Reforms/Counter Reforms)*

प्रोटेस्टेंट धर्म के बढ़ते हुए प्रसार से प्रेरित होकर व अपना अस्तित्त्व बनाए रखने के लिये कैथोलिक चर्च के लिये आवश्यक था कि वह अपने में आ गए सामयिक दोषों का निराकरण करे और नवीन चेतनायुक्त समाज से सुसगंत धार्मिक व्यवस्था प्रदान करे। इसी का परिणाम था 1545 से 1563 तक चली ट्रेंट की सुधार सभा जिसके परिणाम थे अनेकानेक सुधारात्मक कदम।

इन सुधारों में सम्मिलित था चर्च में पदों की बिक्री पर रोक, स्वर्ग में स्थान आरक्षित करवाने की प्रथा पर पांबदी, पादरियों की शिक्षा-दीक्षा व नैतिक आचरण की सुनिश्चतता, लैटिन के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में उपदेश की स्वतंत्रता परन्तु इन सुधारात्मक उपायों के साथ ही कुछ सिद्धांत ऐसे भी थे जिसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया जैसे- पोप कभी गलत नहीं हो सकता, बाइबिल की व्याख्या का एकाधिकार पोप को, मोक्ष प्राप्ति में चर्च की मध्यस्थता जैसे परम्परागत ईसाई सिद्धांत-यह पूर्ववत् ही रहे।

इसी क्रम में स्पेन में जहाँ प्रोटेस्टेंट की स्थिति काफी कमज़ोर थी, वहाँ 'जेसुइट' नामक पुजारियों का एक संगठन कैथोलिक संघ के रूप में अस्तित्त्व में आया। जेसुइट संघ द्वारा कैथोलिक चर्च में सुधार के हर संभव प्रयास किये गए तथा इस चर्च को मज़बूत करने हेतु विभिन्न देशों में जेसुइट विद्यालय की स्थापना की गई।

धर्म सुधार आंदोलन के कुछ सह उत्पादक तत्त्व भी प्रकाश में आए, जैसे धर्म के नाम पर प्रोटेस्टेंट-कैथोलिक संघर्ष ने आंतरिक कलह एवं युद्धों को बढ़ावा दिया। इस रूप में 1560-1630 ई॰ में डाइनों का सफाया किया गया जिसकी आड़ में कई बेकसूर स्त्रियों पर डाइन होने का आरोप लगाकर उन्हें जिंदा जला दिया गया। फ्राँस में सोलहवीं शताब्दी में आठ धार्मिक युद्ध हुए। धार्मिक उत्पीड़न से तंग आकर इंग्लैंड के प्यूरिटन उत्तरी अमेरिका में जा बसे तथा वहाँ उन्होंने एक विकसित सभ्यता के विकास में योगदान दिये। इतना ही नहीं इंग्लैंड में राजसत्ता तथा चर्च के विरुद्ध 1642 में होने वाले गृहयुद्ध में प्यूरिटन (नव मध्यम वर्ग) के समर्थन से संसद की सर्वोच्चता स्थापित हुई और राजा चार्ल्स प्रथम की हत्या कर दी गई।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि धर्म सुधार आंदोलन ईसाई धर्म में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों के विरुद्ध सुधार के मुद्दे पर शुरू हुए परन्तु शीघ्र ही इसका स्वरूप राजनीतिक एवं आर्थिक तत्त्वों द्वारा निर्धारित होने लगा। अत: धर्म सुधार आंदोलन का दायरा काफी विस्तृत था। इसने पुनर्जागरण के उत्तरवर्ती काल अर्थात् सोलहवीं शताब्दी के अंतिम समय में तत्कालीन नवोदित निरंकुश राजतंत्र को मज़बूत आधार प्रदान किया।

धर्म सुधार आंदोलन: प्रभाव *(Religious Reform Movement: Effects)*

1. **धर्म पर प्रभाव:** धर्म सुधार आंदोलन के दौरान उभरे प्रोटेस्टेंट चर्च व अन्य 'राष्ट्रीय चर्चों' के कारण ईसाई धर्म की एकता हमेशा के लिये खण्डित हो गई। किंतु इसका सकारात्मक प्रभाव यह रहा कि धार्मिक सहिष्णुता बढ़ी व विभिन्न सम्प्रदाय आपस में शांतिपूर्ण सहअस्तित्त्व की भावना से अभिप्रेरित हुए। धर्म सुधार आंदोलन के दौरान ही राजव्यवस्था व धर्म का स्पष्ट पृथक्कीकरण हुआ और राजनीति को धर्म पर बढ़त हासिल हुई। इन प्रवृत्तियों ने धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को स्थापित कर दिया। धर्म सुधार व प्रतिधर्म सुधार से धर्म, "रूढ़ि, अंधविश्वास, आडम्बर व जटिलता से मुक्त होकर अधिक सहज, मानव जीवन के नजदीक और सरल हो गया।"
2. **राजनैतिक परिणाम:** राजनैतिक रूप से अधिक सुदृढ़ राजतंत्र अस्तित्त्व में आया जिसके पीछे सिद्धांत रूप में धर्मनिरपेक्षता का आधार था। चर्च के 'कर' तथा 'न्याय' संबंधी अधिकारों की समाप्ति से अधिक शक्तिशाली राज्यों का निर्माण हुआ। मध्यवर्ग तथा व्यापारिक पूंजीवादी व्यवस्था ने राष्ट्रीय राज्यों का समर्थन किया।
3. **आर्थिक परिणाम:** धर्म सुधारों ने पूंजीवादी व्यवस्था के विकास को समर्थन दिया क्योंकि अधिकांश धर्म सुधारक 'व्यक्तिगत स्वतंत्रता' के समर्थक और 'आर्थिक प्रतिबंधों' के विरोधी थे। धर्म सुधार ने ब्याज पर लेन देन, धन संग्रहण (पूंजी निर्माण) को स्वीकार्यता प्रदान की जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी। सुधारों के परिणामस्वरूप यूरोप का धन प्रवाह जो कि 'पोप की तरफ' था और अनुत्पादक कार्यों में नष्ट होता था वह रुक गया और उत्पादन प्रक्रिया को त्वरित करने में सहायक सिद्ध हुआ।

4. **समाज पर प्रभाव:** धर्म सुधारों के दौरान अत्यधिक हत्या व रक्तपात की घटनाएँ हुई जिससे जान माल को नुकसान और वैमनस्यता का प्रसार हुआ। सामाजिक गतिविधियों पर चर्च का नियंत्रण कमज़ोर होने, विवाह जैसी संस्थाएँ मात्र संविदा बनकर रह गई जिससे तलाक की प्रवृत्ति बढ़ी। पूंजीवादी व्यवस्था के विकास से समाज में विषमता अंतराल में वृद्धि हुई जिससे सामाजिक तनाव व वर्ग संघर्ष की प्रवृत्ति का विकास हुआ।
5. **संस्कृति पर प्रभाव:** उपदेश व व्याख्या हेतु अन्य भाषाओं के प्रयोग को मान्यता मिलने से लैटिन के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ। लूथर ने संगीत को चर्च से जोड़ा जिससे संगीत को मान्यता (धार्मिक) प्राप्त हुई।

प्रबोधन *(Enlightenment)*

17वीं-18वीं शताब्दी में होने वाले क्रांतिकारी परिवर्तनों के फलस्वरूप यूरोप में वैज्ञानिक चेतना, तर्क, विवेक, मानवतावादी दृष्टिकोण एवं अन्वेषण की नवीन प्रवृत्ति ने परिपक्व अवस्था को प्राप्त किया और यही परिपक्व अवस्था प्रबोधन के नाम से जानी जाती है। यह एक बौद्धिक क्रांति थी, जिसका आधार पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन एवं वाणिज्यिक क्रांति ने तैयार किया था। प्रबोधन रूपी ज्ञानोदय की इस स्थिति ने अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पश्चिमी दुनिया में हुए विभिन्न क्रांतिकारी घटनाओं जैसे- अमेरिकी क्रांति, फ्राँसीसी क्रांति एवं नेपोलियन बोनापार्ट के सैनिक अभियान, जिसका दुनिया पर व्यापक असर पड़ा, को प्रेरित किया। प्रबोधनकालीन चिंतकों ने इस बात पर विशेष ज़ोर दिया कि भौतिक दुनिया एवं प्रकृति में होने वाली घटनाओं के पीछे किसी न किसी व्यवस्थित, अपरिवर्तनशील, शाश्वत एवं प्राकृतिक नियम का हाथ है। अगर हम ये कहें कि प्रबोधन अथवा ज्ञानोदय केपलर, गैलिलियो एवं न्यूटन जैसे वैज्ञानिकों के आविष्कारों के कारण संभव हो सका तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

प्रबोधन की प्रमुख विशेषताएँ *(Major Characteristics of the Enlightenment)*

(i) **अनुभूतिमूलक ज्ञान**- इसके अंतर्गत ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव होने वाले ज्ञान ही हमारे ज्ञान का वास्तविक स्रोत हैं। इस संबंध में जन्मजात विचार एवं ईश्वरीय सत्य नाम की कोई चीज नहीं है।

(ii) **ज्ञान-विज्ञान में अंर्तवैयक्तिक संबंध**- प्रबोधन युग में मुख्यत: ज्ञान का प्राकृतिक विज्ञान के साथ अंत:संबंध स्थापित हुआ। प्रबोधन चिंतकों द्वारा सत्य तक पहुँचने का सक्षम आधार पर्यवेक्षण, प्रयोग एवं आलोचनात्मक छानबीन की व्यवस्थित पद्धति को स्वीकार किया गया। यह स्वीकार किया गया कि ज्ञान, प्रयोग एवं परीक्षण योग्य होना चाहिये। इसी धारणा पर प्रबोधन युग में पराभौतिक अनुमान एवं ज्ञान में अंतर किया गया। वस्तुत: मध्यकाल में ईसाई मत का प्रभाव इसलिये स्वीकार किया जाता था क्योंकि यह माना जाता था कि ईश्वरकृत इस दुनिया को जान पाना मनुष्य के वश की बात नहीं है। परन्तु, प्रबोधन काल में विकसित ज्ञान ने इस दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया एवं यह दावा किया कि जिन चीजों को बुद्धि के प्रयोग एवं व्यवस्थित पर्यवेक्षण से नहीं जाना जा सकता है वे मायावी हैं। मानव ब्रह्माण्ड के रहस्यों को पूर्णरूपेण समझने में सामर्थ्यवान है। प्रकृति के बारे में रूढ़िवादी एवं धार्मिक पवित्र पुस्तकों के माध्यम से नहीं बल्कि प्रयोगों एवं परीक्षणों के माध्यम से ही समझा जा सकता है।

(iii) **कार्य-कारण संबंध का अध्ययन**- प्रबोधनकालीन चिन्तन का केन्द्रीय तत्त्व था- कार्य-कारण संबंध का अवलोकन। समकालीन चिंतकों ने मुख्यत: पूर्ववर्ती घटना को रेखांकित करने की कोशिश की, जो किसी परिघटना के उत्पन्न होने के लिये अनिवार्य था अर्थात् पूर्ववर्ती घटना के न होने से परवर्ती घटना उत्पन्न नहीं होती है।

(iv) **मानवतावादी दृष्टिकोण**- मनुष्य को स्वभाव से एक विवेकशील एवं विनम्र प्राणी स्वीकार किया गया। प्रबोधनयुगीन चिंतकों ने मानव की खुशी एवं भलाई पर ज़ोर दिया। मनुष्य को स्वार्थी धर्माधिकारियों के नियंत्रण से मुक्त कर एक आदर्शवादी समाज के निर्माण हेतु प्रयास करने को प्रोत्साहन दिया गया। प्रबोधनकालीन चिंतकों ने इस बात को जोरदार रूप में सामने रखा कि यह संसार मशीन की तरह है जिसका नियंत्रण एवं संचालन कुछ खास नियमों के अनुसार ही होता है। इसका उद्देश्य व्यक्तियों को अपने पर्यावरण पर नियंत्रण स्थापित करने में सामर्थ्यवान बनाना था ताकि वे प्राकृतिक शक्तियों की विंध्वसात्मक शक्तियों से अपनी रक्षा कर सकें।